E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 1 | January 2026

सरदार पटेल का स्त्री-सशक्तिकरण संबंधी दृष्टिकोण

डॉ. गायत्री गोहेल*
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास
डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय,अहमदाबाद

सारांश :

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय इतिहास के उन महान नेताओं में से एक हैं जिनके योगदान को प्रायः राजनीतिक एकीकरण और प्रशासनिक दृढ़ता के संदर्भ में रेखांकित किया जाता है; किंतु उनकी सामाजिक दृष्टि, विशेषकर भारतीय स्त्री की स्थिति और उसकी उन्नति के प्रति संवेदनशीलता, समानरुप से उल्लेखनीय है। यह शोध–पत्र सरदार पटेल के स्त्री–सशक्तिकरण सम्बन्धी विचारों, उनका दृष्टिकोण और कार्य को प्रस्तुत करता है। शोध पत्र में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, बारडोली सत्याग्रह में महिलाओं के नेतृत्व, महिला–शिक्षा पर पटेल की अवधारणाओं, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध उनके दृष्टिकोण, और स्वतंत्र भारत में महिलाओं के लिए नीति–निर्माण संबंधी उनके योगदान का गहन अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पटेल स्त्री–सशक्तिकरण को न केवल सामाजिक सुधार का आधार, बल्कि राष्ट्रीय उत्थान की अनिवार्य शर्त मानते थे। यह शोध यह भी दर्शाता है कि आधुनिक भारत में महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की चुनौतियों को समझने में पटेल के विचार अभी भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने स्वतंत्रता-पूर्व और तत्कालीन काल में थे।

मुख्य शब्द : सरदार पटेल, स्त्री-सशक्तिकरण, महिला शिक्षा, सामाजिक सुधार, बारडोली सत्याग्रह, राष्ट्र– निर्माण, राजनीतिक सहभागिता

प्रस्तावना :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र-निर्माण के दौर में अनेक नेताओंने सामाजिक सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया, जिनमें सरदार वल्लभभाई पटेल का स्थान विशेष रुप से महत्वपूर्ण है। उन्हें प्रायः “लौह पुरुष” के रुप में स्मरण किया जाता है, किंतु उनका व्यक्तित्व केवल राजनीतिक दृढ़ता तक सीमित नहीं था; सामाजिक न्याय, समानता और स्त्री-उत्थान के प्रति उनकी दृष्टि भी उतनी ही प्रगतिशील और व्यवहारिक थी। सरदार पटेल का मानना था कि स्त्री केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की नैतिक शक्ति भी है। वे स्त्रियों को शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सशक्त बनाने के पक्षधर थे। उनके अनुसार, स्वतंत्र भारत की वास्तविक स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब स्त्रियाँ सामाजिक कुरीतियों, अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता और लैंगिक भेदभाव से मुक्त होंगी। इसी कारण उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, स्वावलंबन, स्वदेशी आंदोलनों में सहभागिता तथा सामाजिक सुधार अभियानों में उनकी भूमिका को विशेष महत्व दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके पश्चात् राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में सरदार पटेल ने नारी-शक्ति को संगठित करने का प्रयास किया।

सरदार पटेल का स्त्री-सशक्तिकरण संबंधी दृष्टिकोण ओर कार्य:

१९१५ ई. में गांधीजी के भारत लोट्ने के बाद, उन्होंने देश के विकास के लिए गतिविधियाँ शुरु कीं। उनमें से एक महिलाओं की उन्नति थी। गांधीजी के साथ वल्लभभाई पटेल भी महिलाओं की उन्नति के कार्य मे जुडे। सरदार पटेल का मानना था कि जब तक महिलाओं को उचित स्थान और अवसर नहीं मिलेगा, समाज प्रगति नहीं कर पाएगा।

*Corresponding Author Email: gaytrigohel9078@gmail.com
Published: 3 January 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i1.45469
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

३० जुलाई १९४२ को महिलाओं की एक सभा का आयोजित अहमदाबाद में कीया गया था। इस सभा मे सरदार पटेलने महिलाओं से कहा की, 'पुरुषों के वश में जीवन बिताने के बदले वो घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर कार्य करे', अपने अनूठे भाषण शैली के माध्यम से शारीरिक और मानसिक रुप से सक्षम लेकिन आश्रित गरीब बहनों को आगे लाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का महान कार्य उनहोने किया। सरदार का मानना था कि यदि बहनें देश के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होंगी, तो वे न केवल देश को आजादी दिलाएंगे बल्कि स्वयं को भी गुलामी से मुक्त करेंगे। सरदार पटेल महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिये कहते थे कि, पहले तो युद्ध में जाने वाले ही मरते थे, लेकिन अब दूर-दूर से विमान आते हैं और गोलीबारी करते हैं। निर्दोष लोग मारे जाते हैं। ऐसे विश्व युद्ध में अगर पुरुषों को गिरफ्तार कर लिया जाए, तो उन पर निर्भर रहकर आप क्या करेंगी? आत्मनिर्भर बनो। अगर गुंडों का भी सामना करना पड़े, तो करो। इस तरह सरदार महिलाओं को सशक्त बनाते थे।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने १५ जून, १९३८ को अहमदाबाद के ज्योति संघ में अपने भाषण में कहा था कि, महिलाओं के लिए आत्मविश्वास हासिल करना और अपना उचित स्थान पाना आवश्यक है। ऐसे सुधार कानून द्वारा नहीं किए गए हैं, न ही किए जाएंगे। सरदार पटेल की इस कथन से महिलाओ को जाग्रुत होने की ओर अपना स्थान समाजमें खुद ही बनाने की सलाह देते है।

स्त्री-शिक्षा पर सरदार पटेल के विचार:

सरदार वल्लभभाई पटेल शिक्षा को स्त्री-सशक्तिकरण का मूल मंत्र मानते थे। वे अक्सर कहते थे कि यदि एक स्त्री शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। उनका मानना था कि स्त्री-शिक्षा केवल सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास का आधार है। वे महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित करते थे, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

सरदार पटेलने विठ्ठल कन्या विद्यालय की स्थापना की उनका उदेश कन्या शिक्षा को बढावा देना था । इस विद्यालय में सभी जातियों की कन्याएँ शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। लेकिन विठ्ठल कन्या विद्यालय का संचालन ऋण लेकर करना पड़ता था और इसके लिए सरदार वल्लभभाई पटेल ने १८/०४/१९४७ को मणिबाई पटेल को लिखे पत्र में कहा था कि "ऋण लेकर विठ्ठल कन्या विद्यालय का संचालन करना असहनीय है। आप अपना सारा समय इसी कार्य में लगाएँ और विद्यालय को आर्थिक संकट से मुक्त करें। इसके लिए आपको जहाँ भी जाना पड़े और भाइयों से भी सहायता लेनी पड़े, इस कार्य को यथाशीघ्र पूरा करें।" यह पत्र दर्शाता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल बालिका शिक्षा के प्रबल समर्थक थे।

वल्ल्भभाई को ता.१/१०/१९४८ के दिन दरबार गोपालदास पत्र लिखते है, की राजकोट मे आपके नाम से एक कन्या विध्यालय स्थापित करनी है विध्यालय के लिये ५०,००० का दान भी मिला है। महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरदार कितने दृढ़ थे, यह उनके द्वारा दरबार गोपालदास को लिखे पत्र के उत्तर से समझा जा सकता है। सरदार ने कहा था कि सुभद्राबेन और सुमतिबेन अच्छी तरह से तैयार हैं। इसलिए आपका काम अच्छा चलेगा। अगर कोई मदद चाहिये तो बताना। उपरोकत कथन से सरदार वल्लभभाई पटेल बालिका शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। सरदार उत्तर मे गोपालदास को कहा था कि हम लड़कियों की शिक्षा के मामले में बहुत पिछड़े हुए हैं। जितने अधिक बालिका विद्यालय खुलेंगे, उतना ही अच्छा होगा। इस पर शीघ्र कार्य करने की आवश्यकता है। मुझे आप दोनों (गोपालदास-भकिताबा) की रुचि देखकर अच्छा लगा। इस प्रकार सरदार कन्या विधालयो को स्थापित करने के लिये प्रोत्साहित करते थे सरदार पटेल की प्रेरणा से बालिका शिक्षा का विकास न केवल शहरी क्षेत्रों में हुआ बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी हुआ। मढ़ी कन्या आश्रम में डांग और साबरकांठा जैसे वन क्षेत्रों की लड़कियां भी शिक्षा प्राप्त कर रही थीं।

राष्ट्रीय आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका पर सरदार पटेल की दृष्टि:

सरदार पटेल का मानना था कि स्वतंत्रता संग्राम में केवल पुरुषों को ही नही, बल्कि महिलाओं को भी जुड़ना चाहिये क्युकि, वो जानते थे महिलायें स्वातंत्रय संग्राम में जुडेगी तो महिलाओ को भी अपनी शक्ति का परीचय होगा, उनका आत्मसन्मान बढेगा ओर अपनी कार्यशक्ति के प्रति सजाग होगी । उन्होंने आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। उनका विश्वास था कि महिलाएँ केवल मात्र धर परिवार तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्रीय नेतृत्व की भी प्रबल क्षमता रखती हैं।

खेड़ा सत्याग्रह में महिलाओं की भागीदारी:

खेड़ा में जब कृषक अकाल और कर-वसूली से पीड़ित थे, तब सरदार पटेलने महिलाओं को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उनकी अपील पर बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएँ आगे आईं। उन्होंने न केवल सभाओं में हिस्सा लिया, बल्कि सत्याग्रहियों को भोजन, पानी और सुरक्षा प्रदान की। कई स्थानों पर महिलाओं ने अंग्रेज अधिकारियों का सीधे विरोध भी किया। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिला-भागीदारी का पहला बड़ा मोड़ था। पटेल ने इसे "ग्रामीण स्त्री-शक्ति का जागरण" बताया।

बारडोली सत्याग्रह में:

१९२८ ई का बारडोली सत्याग्रह तो स्त्री-सशक्तिकरण का ऐतिहासिक प्रतीक है। इस आंदोलन के दौरान हजारों महिलाएँ मोर्चे पर उतर आईं। बारदोली सत्याग्रह में गुजरात की महिलाओं ने भरपूर भागीदारी निभाई थी। उन्होंने पुरुषों की गिरफ्तारी के समय आंदोलन की कमान संभाली, घर-घर जाकर महिलाओं को संगठित किया और अंग्रेजों की कर-वसूली को रोकने में अहम भूमिका निभाई। बारडोली सत्याग्रह के दोरान ही अपने भाषण में सरदार पटेल ने कहा था, की,'बहनों, मैं तुम्हारे पैरों और हाथों में गुलामी की निशानियां नहीं देखना चाहता. ये जो तुम पीतल के भारी गहने पहनती हो वो बेकार है. ये बहुत गंदगी जमा करते हैं. इससे त्वचा वाली बीमारियां होती हैं. मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि इससे तुम जल्दी छुटकारा पा जाओ.' उस वक्त पटेल के इस भाषण का महिलाओं पर गहरा असर पड़ा था. बारदोली सत्याग्रह के कुशल नेतृत्व और इसके बाद ब्रिटिश सरकार के किसानों की मांग मान लिए जाने के बाद गुजरात की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी. इसके बाद वल्लभभाई पटेल सरदार पटेल के नाम से मशहूर हुए.

सामाजिक सुधारों में सरदार पटेल की भूमिका:

सरदार पटेल केवल एक राजनीतिक नेता नहीं बल्कि गहन सामाजिक चिंतक भी थे। वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि महिलाओं को सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति दिलाए बिना राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। उन्होंने ग्रामीण स्तर पर जागृति अभियान चलाए और सभाओ में अपने भाषणो में जोर देकर कहा कि बाल-विवाह, दहेज, पर्दा-प्रथा और अशिक्षा जैसी कुरीतियाँ स्त्री-विकास को बाधित करती हैं। वे कहते थे कि "स्त्री समाज की धुरी है, उसकी शिक्षा और स्वतंत्रता बिना समाज का सुधार अधूरा है।" उन्होंने महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्मान और सुरक्षा को अनिवार्य अधिकार माना। भारतीय समाज में बाल विवाह की बुराई व्यापक रूप से फैल चुकी थी। बाल विवाह की प्रथा का विरोध करते हुए सरदार पटेल ने कहा, "किसानों की सबसे बड़ी कमियों में से एक यह है कि वे पुरानी परंपराओं का पालन करते हुए अपनी बेटियों की शादी बहुत कम उम्र में कर देते हैं।" बारडोली से जीत के बाद दिए गए अपने भाषण में सरदार ने कहा था कि क्या किसी समुदाय को कम उम्र में बच्चों की शादी करने से कोई लाभ हो सकता है? क्या वे लोग जो खुद को सीने में गोली मारने की बात करते हैं, कभी अपने कम उम्र के बच्चों की शादी करेंगे? क्या सरकार को लड़कों की शादी एक निश्चित उम्र से पहले रोकने के लिए कानून बनाने चाहिए? इस प्रकार अपनी बात लोगो के सामने रख कर बालविवाह का विरोध करते थे । सरदार वल्लभभाई पटेल ने समाज से बाल विवाह की बुराई को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए एक सशक्त अभियान चलाया।

सरदार पटेल महिलाओं के पर्दा प्रथा के भी खिलाफ थे. महिलाओं को पर्दे के पीछे रखने के वो घोर आलोचक थे. एक बार अपने भाषण में इसकी मुखालफत करते हुए, उन्होंने कहा था- तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम अपनी औरतों को पर्दे में रखते हो? ये महिलाएं कौन हैं? तुम्हारी माताएं, बहनें और पत्नी. क्या तुम्हें लगता है कि पर्दे में रखकर ही तुम अपनी औरतों की पवित्रता का ख्याल रख सकते हो? अगर मैं कह सकता तो तुम्हारी औरतों से कहता कि ऐसे कायर पति के साथ रहने से ज्यादा अच्छा है तुम तलाक ले लो.'इस प्रकार सरदार पटेलने समाज में जड़ जमा हो चुकी ये बुराइयाँ दूर करना चाहा था ओर वो अधिकाश सफल हुए थे।

महिलाओं के आरक्षण संदर्भ सरदार पटेल के विचार :

म्युनिसिपालिटी की सभासद महिला बन सके ईस उपलक्ष में बोंम्बे की धारासभा में आवेदन कीया गया । किंतु इस बात का भयंकर विरोध उठाया गया । उस उपलक्ष में १९१९ ई. में अहमदाबाद की महिलाओं ने मांग उठाई कि नगरपालिका में महिलाओं

को सदस्य बनाया जाए और उनके लिए आरक्षित सीटें हों। महिलाओं की लंबे समय से चली आ रही मांगों का सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ पर प्रभाव पड़ा। १३ फरवरी १९१९ ई. को दूरदर्शी सरदार ने नगरपालिका अध्यक्ष रमनभाई नीलकंठ को एक नोटिस भेजा, जिसमें कहा गया, "यह बोर्ड दृढ़तापूर्वक मांग करता है कि जिला नगरपालिका अधिनियम की धारा १५ (१) (ग) में उल्लिखित जाति आधारित अयोग्यताएं तत्काल हटाई जाएं और सरकार इस संबंध में कानून में तत्काल संशोधन की घोषणा करे।" इससे स्पष्ट है कि महिलाओं को न्याय मिलने और उनकी मांगें पूरी होने पर सरदार वल्लभभाई पटेल काम करने के लिए उत्सुक थे, क्योंकि इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता था। इसी कारण सरदार ने महिलाओं से संबंधित किसी भी कार्य में ढिलाई नहीं बरती।

सरदार पटेल ने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत प्रयास किए कि महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त हों और महिलाएं पुरुषों की तरह प्रशासनिक कार्यों में भाग ले सकें। बॉम्बे जिला नगर पालिका अधिनियम में यह प्रावधान था कि कोई भी महिला अहमदाबाद नगरपालिका की सदस्य नहीं बन सकती थी। इस संदर्भ में सरदार पटेल ने कहा, "यदि समाज की आधी आबादी महिलाएं हैं, तो उन्हें ऐसे भेदभावपूर्ण कानून के कारण उनके अधिकारों से वंचित क्यों किया जाए? समाज की आबादी पुरुषों के बराबर ही है। उतनी ही आबादी महिलाओं की भी है। इसलिए यदि पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त हैं, तो इन महिलाओं को ऐसे अधिकारों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए और उन्हें भी उनका हिस्सा बनाया जाना चाहिए।" उस समय नगर पालिका के पास कानून बदलने की शक्ति नहीं थी। लेकिन उस समय के सभी कानून लागू थे। सरदार पटेल के प्रयास के बाद अमदावाद म्युनिसिपालिटीने महिलाओं के आरक्षण संबधी आवेदन को सर्वानुमत से सहमती प्रदान की । इस प्रकार सरदारने महिलाओ को आरक्षण दिलाने में महत्वपुर्ण भूमिका निभाई ।

निष्कर्ष:

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता और राष्ट्रनिर्माण के महानायक थे, परंतु उनका व्यक्तित्व केवल राजनीति तक सीमित नहीं था। वे एक संवेदनशील, दूरदर्शी और समाज-सुधारक नेता थे। उन्होंने स्त्री को राष्ट्र की सह-निर्माता के रूप में देखा और उसे शिक्षा, सम्मान, सुरक्षा और अधिकार देने की पुरजोर वकालत की। बारडोली और खेड़ा सत्याग्रह में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और उसके प्रति उनका सम्मान स्त्री-सशक्तिकरण के प्रति उनकी गहरी निष्ठा का प्रमाण है।

संदर्भ सूची:

१. कादरी, रीज़वान. (2003). सरदार पटेल : एक सिंहपुरुष. अहमदाबाद: गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय।

२. भट्ट, सिद्धार्थ नरहरी (संपा.). (2001). सरदार की विचारसृष्टि. गांधीनगर: आयुक्त, युवा सेवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा सदस्य सचिव, सरदार वल्लभभाई पटेल 125वीं जन्मजयंती उत्सव समिति, गुजरात राज्य।

३. दोषी, यशवंत. (2020). सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवनचरित्र (भाग–1). अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।

४. परिख, नरहरि., एवं शाह, उत्तमचंद (सं.). (2003). सरदार वल्लभभाई के भाषण. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

५. चोपड़ा, पी. एन. (2017). द सरदार ऑफ़ इंडिया: बायोग्राफी ऑफ़ वल्लभभाई पटेल. नई दिल्ली: कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि.

६. परिख, नरहरि. (2020). सरदार वल्लभभाई पटेल (खंड 1). अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।